बांसवाड़ा जिले में जनजातियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति

✧ श्रीमती निशा शर्मा

1.1 परिचय :–बांसवाड़ा जिला राजस्थान में जनजातीय बाहुल्य के रूप में जाना जाता हैं। जनजातियाँ यहाँ सम्पूर्ण जिले में निवास करती है। यह जिला जनजातीय उपयोजना क्षेत्र (TSP) कें अन्तर्गत आता हैं । यहां मुख्यतः मीणा एवं भील जनजातियॉ निवास करती है। ये जनजातियाँ अपने जीवन यापन के लिए कृषि, पशुपालन, मजदूरी, कृषि मजदूरी, दैनिक मजदूरी, खनन एवं वन सम्पदा के विक्रय का कार्य प्रमुखता से करती है।

1.2 जिले की स्थिति :–इतिहासकारों के अनुसार बांसवाड़ा जिले का नाम भील सरदार बांसीया के नाम के आधार पर पड़ा।[1] बांसवाड़ा जिला राजस्थान के दक्षिणी अंचल में अवस्थित है। प्राचिनकाल में बांगड प्रदेश के रूप में विख्यात यह आदिवासी बाहुल्य जिला राज्य के दक्षिण भाग मे 23.11° से 23.56° अक्षांश एवं 73.58° से 74.58° डिग्री देशान्तर के मध्य 5037 वर्ग कि.मी. क्षेत्र मे फैला हुआ है । वर्ष 2001 कि जनगणना के अनुसार यहां की जनसंख्या 15,01,589 है। जिले की जनसंख्या में 23.44 प्रतिशत जनसंख्या सामान्य वर्ग की हैं तथा 4.28 प्रतिशत जनसंख्या अनूसूचित जाति एवं सर्वाधिक 72.28 प्रतिशत जनसंख्या अनुसूचित जनजाति की है।[1]

1.3 'kks/k dk mn~ns'; :–प्रस्तुत शोध के निम्न उद्देश्य है :– 1. बांसवाड़ा जिले की जनजातियों के जनांकिकी, आयु एवं लिंग संरचना का आकलन करना। 2. जिले में निवासित जनजातियों की सामाजिक संरचना की व्याख्या करना। 3. जनजातियों के व्यावसायिक प्रतिरूप की व्याख्या करना। 4. जनजातियों की आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करना।

1.4 'kks/k U;kn'kZ :–सर्वेक्षण वर्ष – 2006–07

सर्वेक्षित क्षेत्र	–	बांसवाड़ा जिला
निर्देशन इकाई	–	जनजातीय परिवार
सर्वेक्षित परिवार	–	100 जनजातीय परिवार।

1.5 'kks/k fof/krU= :–बांसवाड़ा जिले में जनजातियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का भौगोलिक विश्लेषण करने के लिए जिले के 100 जनजातीय परिवारों का चयन उद्देश्यपूर्ण निर्देशन विधि से किया गया। इस प्रकार चयनित 100 जनजातीय परिवारों का वर्षों 2006–07 में व्यक्तिगत सर्वेक्षण कर सूचनाएँ एकत्र की गई है। चयनित परिवारों का स्वरूप एवं आकार, परिवार का शैक्षणिक स्तर, स्वयं का शैक्षणिक स्तर, वैवाहिक आयु, परिवारों का आय प्रतिरूप एवं व्यय आदि दशाओं का अध्ययन साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया। इसके लिए न्यादर्श प्रचना तैयार की गई। इसके पश्चात् आकड़ों का सारणीयन कर मूल आंकड़ो का विश्लेषण किया गया है।

2 (अ) tutkfr;ksa dh lkekftd lajpuk :–

सामाजिक संरचना के अन्तर्गत परिवार का स्वरूप, आयु एवं लिंग संरचना जनांकिकी प्रतिरूप, आयु शैक्षणिक स्तर, आदि का अध्ययन किया गया है। विवाह पर आधारित या यंग्रोत्रंता से आबद्ध एक सामाजिक समूह को परिवार कहते है सामाजिक संरचना की नींव पर परिवार सबसे छोटी इकाई है, किन्तु साथ ही यह सामाजिक समूहों में सर्वाधिक विस्तृत रूप है। परिवार का सरलतम स्वरूप नाभिकीय, प्रारम्भिक या दाम्पत्तिक है। जिसमें माता–पिता तथा बच्चे आते है, सांख्यिकी उद्देश्य हेतु संतानहीन, पति–पत्नी भी एक परिवार कहलाते है।

2.1 vk;q ,oa fyax lajpuk :–आयु संरचना, सामाजिक संरचना का एक महत्वपूर्ण अंग है। आयु संरचना समाज में व्यक्तियों के एक समूह विषेष के योगदान को दर्शाती है। जिसका प्रभाव सामाजिक एवं आर्थिक, परिप्रेक्ष्य में प्रत्येक पहलु में दृष्टिगोचर होता है। आयु संरचना की जनांकिकी विभिन्नताएं आर्थिक विभिन्नता विकास योजनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है।

सारणी 1 – उत्तरदाता एवं उम्र संरचना–

Ø- l-	vk;q lewg	mÙkjnkrkvksa dh la[;k
1.	15–25	20
2.	25–35	28
3.	35–45	26
4.	45–55	18
5.	55 से अधिक	8
	;ksx	100

स्त्रोत : अनुसन्धानकर्ता द्वारा स्वयं संकलित

बांसवाड़ा जिले में चयनित 100 जनजातीय परिवारों में से 20 उत्तरदाता 15–25 आयु समूह से तथा 28 उत्तरदाता 25–35 आयु समूह के है जो कि चयनित जनजातियों में सर्वाधिक है। 35–45 आयु समूह के उत्तरदाताओं की संख्या 26 है। तथा 45–55 आयु समूह के उत्तरदाताओं की संख्या 18 है। जबकि 55 वर्ष से अधिक उत्तरदाताओं की संख्या मात्र 8 है। यदि हम चयनित क्षेत्र में उत्तरदाताओं का उम्र के आधार पर विश्लेषण करें, तो प्राप्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि मुख्यतया जो जानकारी एकत्र की गई है वो अधिकांश रूप से युवा अथवा अधेड़ उम्र के उत्तरदाताओं से सम्बन्धित है।

2.2 ifjokj dk vkdkj ,oa Lo:i :–परिवार प्रत्येक सामाजिक संरचना की महत्वपूर्ण प्राथमिक इकाई हैं एवं साथ ही भारतीय परिवेश में हमें परिवार के भिन्न–भिन्न स्वरूप देखने को मिलते है। हिन्दू समाज या गैर जनजाति समाज में कालान्तर से संयुक्त परिवार अथवा वृद्ध परिवार समूह देखने को मिलते है वही जनजाति समाज के परिप्रेक्ष्य में परिवारों का स्वरूप अधिकांशतः एकांकी देखने को मिलता है। इसका मूलभूत कारण आदिवासी समाजों में पाये जाने

वाली विशिष्ट सामाजिक संरचना एवं आयाम है। निर्देशन में सम्मिलित चयनित क्षेत्रों के जनजातीय परिवारों की पारिवारिक आकार के आधार पर जानकारी यहां प्रस्तुत है।

lkj.kh&2 & p;fur tutkrh; ifjokjksa dk vkdkj

Ø-l-	ln- l[;k ifr ifjokj	m-nk- dh l[;k
1.	2 से 6 सदस्य	44
2.	7 से 11 सदस्य	48
3.	11 से अधिक	8
	;ksx	100

स्त्रोत : अनुसंधानकर्ता द्वारा स्वयं संकलित

सारणी संख्या 2 चयनित जनजातीय परिवारों का पारिवारिक आकार के आधार पर वर्गीकरण किया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि 2 से 6 सदस्य वाले जनजातीय परिवारों की संख्या 44 हैं तथा 7 से 11 सदस्य वाले जनजातीय परिवारों की संख्या 48 है, इसी प्रकार 11 से अधिक सदस्य वालें जनजातीय परिवारो की संख्या 8 है। इस प्रकार स्पष्ट है कि जनजातीय समाज में वर्तमान में भी एकांगी परिवार का स्वरूप देखने को मिलता है जिसका मूलभूत कारण जनजातीय परिवारों में विवाह के पश्चात् संतान को परिवार से पृथक कर देने का माना जा सकता है। (Dubey & Bahadur, 1967, 33-35)

2.3 oSokfgd vk;q :—परिवार का निर्माण तब ही सम्भव है, जब व्यक्ति परिवार स्त्री साध्य को विवाह रूपी साधन के माध्यम से प्राप्त करें। इसी संबंध में गैर जनजाति एवं जनजाति समाजों में वैवाहिक आयु का भी निर्धारण किया गया है। प्राचीनकाल में जहां हिन्दू समाजों में आश्रम व्यवस्था के माध्यम से व्यक्ति की वैवाहिक आयु का निर्धारण किया गया वहीं मध्यकाल में विविध प्रभावों के फलस्वरूप बाल—विवाह का प्रचलन बढ़ा, परन्तु अगर इसी तथ्य को जनजाति समाजों पर लागू करें तो वर्तमान में भी आदिवासियों में अधिकांश विवाह वयस्क आयु के पश्चात् ही क्रियान्वित हो रहें है। (Upraty, 2000 : 113)। इसी तथ्य की जांच पड़ताल हेतु निर्देशन में सम्मिलित जनजातीय उत्तरदाताओं से विवाह की उपयुक्त आयु के बारे में प्राप्त जानकारी यहां प्रस्तुत है।

lkj.kh 3&p;fur tutkrh; ifjokj ,oa oSokfgd vk;q

Ø-l-	vk;q oxZ o"kksZa esa	mÙkjnkrkvksa dh l[;k
1.	0 से 5 वर्ष	2
2.	5 से 10 वर्ष	19
3.	10 से 15 वर्ष	19
4.	15 से 20 वर्ष	41
5.	20 से अधिक	11
	;ksx	100

L=ksr% अनुसंधानकर्ता द्वारा स्वयं संकलित

सारणी 3 में चयनित क्षेत्रों के उत्तरदाताओं की वैवाहिक आयु के आधार पर जानकारी व वर्गीकरण किया गया हैं। सारणी से स्पष्ट है कि 5 वर्ष तक की आयु में विवाह को उपयुक्त मानने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 2 हैं। 5 से 10 वर्ष तक की आयु में विवाह को उचित मानने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 19 है। 10 से 15 वर्ष तक की आयु में वैवाहिक प्रक्रिया को क्रियान्वित करने वाले चयनित परिवारों की संख्या 27 हैं तथा 15 से 20 वर्ष तक की आयु में वैवाहिक प्रक्रिया को करने वाले परिवारों की संख्या 41 है। इसी प्रकार 20 वर्ष की आयु के पश्चात् परिवार में विवाह संस्कार की क्रियान्विति को उचित मानने करने वाले परिवारों की संख्या 11 है।

चूंकि जनजातीय समुदायों में विवाह संस्कार होने के साथ—साथ समझोता भी है। इसके परिणामस्वरूप जनजातीय समाज में भी बहुविवाह, विधवा पुनर्विवाह तथा स्त्री परित्याग जैसी रीतियां बहुतायतरूप से अपनाई जाती है। अतः जनजातीय परिवारों में 20 वर्ष पश्चात् ही वैवाहिक प्रक्रिया गतिशील रहती है। (Hardwarevala, 1998 : 8 - 12) साथ ही कालान्तर से ही जनजातियों में वयस्क आयु में विवाह ही बहुप्रचलित रहें है। युवागृहों के धीरे—धीरे कम होने से जनजातियों में अल्पायु में विवाह होना प्रारम्भ हो गया। अन्यथा अधिकांश जनजातीय समुदायों में 15 से 20 वर्ष पश्चात् ही विवाह सम्पन्न होते रहें है।

2.4 'kS{kf.kd fLFkfr :—शिक्षा का बहुमुखी तथा गहरा प्रभाव व्यक्तित्व पर पड़ता है इससे व्यक्तित्व में एक तरफ नवीन उद्देश्यों के प्रति जागरूकता पैदा होती है, वहीं व्यक्ति में वैचारिकदृढ़ता, प्रखर चिन्तन, महत्वकांक्षा इत्यादि गुणों का समावेश होता है। अनुसूचित जनजातियों की निम्न सामाजिक स्थिति, शोषण अधीनता का मुख्य कारण अशिक्षा ही है। तथा यह स्थिति आज भी बनी हुई है। इनकी अशिक्षा के कारण प्राचीनकाल से इन्हें सागड़ी प्रथा का पात्र एवं बिचोलियों, साहुकारों के शोषण का शिकार होना पड़ रहा है, हालांकि वर्तमान में शिक्षा प्रसार की व्याप्त प्रक्रिया तथा कल्याण कार्यक्रमों के द्वारा क्षेत्र में परिवर्तन उत्पन्न हुआ है, परन्तु अभी और प्रयास की आवश्यकता है। (Sharma, 1998 : 299-313)

इसी संबंध में निर्देशन में सम्मिलित जनजातीय उत्तरदाताओं एवं उनके परिवार की शैक्षणिक स्थिति के आधार पर वर्गीकरण यहां प्रस्तुत है।

lkj.kh 4 & mRrjnkrkvksa dk f'k{kk Lrj

Ø- l-	f'k{kk Lrj	mÙkjnkrkvksa dh l[;k
1.	निरक्षर	30
2.	साक्षर	25
3.	प्राथमिक	16
4.	उच्च प्राथमिक	12
5.	माध्यमिक स्तर	7
6.	उच्च माध्यमिक स्तर	3
7.	स्नातक	4
8.	स्नातकोत्तर	2
9.	व्यावसायिक प्रशिक्षण	1

स्त्रोत : अनुसंधानकर्ता द्वारा स्वयं संकलित

सारणी 4 में चयनित क्षेत्र के उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर संक्षिप्त जानकारी को दर्शाया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि चयनित क्षेत्र के 100 उत्तरदाताओं में से 30 उत्तरदाता पूर्णतया निरक्षर है। साथ ही 25 उत्तरदाता

मात्र साक्षर है। इसी प्रकार प्राथमिक शिक्षा स्तर वालें जनजातीय उत्तरदाताओं की संख्या 16 एवं उच्च प्राथमिक उत्तरदाता 12 है। इसी प्रकार माध्यमिक स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 7 है। जबकि उच्च माध्यमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या मात्र 3 है। स्नातक तक शिक्षा प्राप्त करने वाले 4 तथा स्नातकोत्तर पढ़ने वाले 2 एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले उत्तरदाता मात्र 1 है। प्राप्त तथ्यों के आधार पर कहां जा सकता है कि शिक्षा के नितान्त अभाव के परिणामस्वरूप ही इनका कालान्तर से विभिन्न वर्गो द्वारा शोषण हो रहा है।

3.1 ¼c½ tutkfr;ksa dh vkfFkZd lajpuk:–किसी समाज, समूह व परिवार की आर्थिक संरचना आय–व्यय के आंकड़ों से जाना जा सकता है। आय–व्यय के आंकड़े एक प्रकार से आर्थिक समृद्धता को मापने का माध्यम है चयनित क्षेत्र की आर्थिक संरचना के अन्तर्गत आय–व्यय प्रतिरूप का अध्ययन किया गया है।

3.2 vk; Lrj:–आय व्यक्ति की सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा सम्मान का प्रतीक है तथा कार्य के लिए प्रेरणा है। इससे जीवन शैली के निर्धारण के साथ ही सामाजिक मूल्यों को दिशा मिलती है। आय सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति के निर्धारण में महत्वपूर्ण नियामक है। इसी आधार पर निर्देशन में सम्मिलित जनजातीय परिवारों का वार्षिक आय के आधार पर वर्गीकरण यहां प्रस्तुत है।

lkj.kh 5&p;fur tutkrh; ifjokj ,oa okf"kZd vk;

Ø-l-	m-nk- dh okf"kZd vk; ¼:i;ksa esa½	m-nk- dh la[;k
1.	0 से 5,000 तक	20
2.	5,000 से 10,000 तक	25
3.	10,000 से 15,000 तक	18
4.	15,000 से 20,000 तक	12
5.	20,000 से 25,000 तक	8
6.	25,000 से अधिक	7
7.	आमदनी बताने में असमर्थ	10

स्त्रोत : अनुसंधानकर्ता द्वारा स्वयं संकलित

सारणी संख्या 6 में चयनित क्षेत्र में जनजातीय उत्तरदाताओं का वार्षिक आय के आधार पर वर्गीकरण किया गया हैं। सारणी से स्पष्ट होता है कि अधिकांश चयनित जनजातीय परिवारों की वार्षिक आय शोचनीय है। चयनित 100 जनजातीय परिवारों में से 83 परिवारों की वार्षिक आय 25,000 रू. तक है, जबकि 25,000 से अधिक वार्षिक आय वाले परिवारों की संख्या मात्र 7 है। इसी प्रकार आमदानी बताने में असमर्थ उत्तरदातओं की संख्या 10 है। निश्कर्षतः कहा जा सकता है कि चयनित जनजाति परिवारों की आर्थिक स्थिति अत्यन्त ही दयनीय है, वर्तमान परिवेश जनजाति समाज के संदर्भ में निर्धनता ही वह अभिशाप है जो इन्हें निम्नतम जीवनयापन करने के लिए मजबूर कर रहा है। जनजातियों द्वारा जीवन व्यापन के लिए आज भी मुख्यतः कृषि, कृषि मजदूरी, मजदूरी, खनन एवं वन सम्पदा का विक्रय का कार्य किया जाता है। यदाकदा लोग जो थोड़े शिक्षित हो गये है वे ही अन्य कार्यो में संलग्न देखे जा सकते है।

3.3 ikfjokfjd [kpZ:–सामान्यतया व्यक्ति की आवश्यकताओं का निर्धारण उसकी आय के आधार पर ही निर्भर है। नगरीय क्षेत्रों में निवास विविध वर्गों की आय जहां अधिक है तो वहीं उनका व्यक्तिगत तथा पारिवारिक खर्च भी ग्रामीण तथा जनजाति समुदायों से उच्च एवं अधिक है, इसी संबंध में जनजाति समाज से संबंधित विभिन्न अध्ययनों से पुष्टि होती है कि जनजाति समुदायों की आर्थिक सदेव निम्न रहीं है जो कि इनके पारिवारिक संरचना को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है । इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए निर्देशन में सम्मिलित चयनित क्षेत्र के जनजाति परिवारों के मासिक व्यय के आधार पर जानकारी यहां प्रस्तुत है।

lkj.kh 6&tutkrh; ifjokj ,oa ikfjokfjd O;;

Ø-l-	ekfld [kpZ	mÙkjnkrkvksa dh la[;k
1.	500 रू. तक	23
2.	500 रू से 1,000 तक	30
3.	1,000 से 1,500 तक	32
4.	1,500 से 2,000 तक	7
5.	2,000 से 2,500 तक	8
	;ksx	100

स्त्रोत : अनुसंधानकर्ता द्वारा स्वयं संकलित

सारणी संख्या 7 चयनित क्षेत्रों के उत्तरदाताओं का मासिक खर्च के आधार पर वर्गीकरण किया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि चयनित क्षेत्र के 23 परिवारों का खर्च 500 रू. प्रति माह है । 30 परिवारों का मासिक व्यय 500 से 1,000 रू. तक है। 1,000 से 1,500 रू. तक मासिक व्यय वाले परिवारों की संख्या 32 है। वे जनजातीय परिवार जो 1,500 से 2,000 रू. प्रतिमाह घरेलू कार्यो पर व्यय करने वाले है उनकी संख्या 7 है। चयनित क्षेत्र के मात्र 8 परिवार ऐसे थे जो 2,000 से 2,500 रू. प्रतिमाह अपनी घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति में खर्च करते है।

fu"d"kZ&अनुसंधान के आधार पर प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट है कि अधिकांश आदिवासी युवा एवं अधेड़ उम्र के है तथा उनका जीवन वन तथा वन उत्पादों पर पूर्णतया निर्भर है एवं वर्तमान में वे न्यूनतम स्तर की आमदानी ही जुटा पा रहें है। अधिकांश आदिवासी निरक्षर या केवल साक्षर स्तर के ही है, मगर पारिवारिक संरचना पर दृष्टिपात करे तो ये परिवार धीरे–धीरे शिक्षा की और अग्रसर हो रहे है।

lanHkZ %

1. Disttrict at Glance Banswara, 2006 2. Dubey & 1967 "A Study of the tribal people and Tribal Bahadur and Tribal areas of M.P.," Indore Goverment Regional press, P-33-35. 3. Upraty Harish 2000 "Bhartiya Janjatiya sangrachana and vikas" Jaipur Hindi Granth Acedamy, P-113. 4. Hardware vala 1998 "Bhil Janjati ki samajik Sarchana avam unky A.H. Riti-Riwaj", Vanyajati XLVI (3) : 8-12. 5. Sharma C.L. 1998 "Bhil Samaj kala aur Sanskriti" Jaipur Malti Prakashan, P 299-313.